Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love
Vol. 012 Issue 05 MAY 2026 Pages 16 A.S. Rs 100

ब्र.स्व. योगीजी महाराज और ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी के
प्रागट्यदिन पर कोटि कोटि वंदन

Snehal Sindhu may 2026-V11.indd 1 08-08-2026 20:05:52

सत्संग समाचार

✻ शुक्रवार, दि. १ मई से रविवार, दि. ३ मई दौरान 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में योगाचार्य प.भ.डॉ. दिपकभाई परमार द्वारा Divine Touch Meditation का आयोजन किया गया था। इस विशिष्ट ध्यान शिबिर में ध्यान के प्रकार, आत्मा की शुद्धि, प्राण पर नियंत्रण, बुद्धि तथा विचारों की शुद्धि और शरीर पर नियंत्रण लाने का मुख्य हेतु था। सभी संतभाईयों तथा संतबहनों की हाजरी में दीपप्रागट्य के साथ सभी शिबिरार्थीओंने दीपकभाई का खास अभिवादन किया।

Divine Touch Meditation Shibir at Powai

✻ शनिवार, दि. २ मई को अनुपम मिशन संचालित खारघर मंदिर के १९वे पाटोत्सव निमित्त 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई की ओर से प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई तथा पू. माधुरीबहन और संतबहनों तथा अन्य हरिभक्तों खारघर पधारे थे और सद्गुरु संत प.पू.डॉ. मनोजभाई सोनी तथा अन्य साधक भाईयों को मिले। पाटोत्सव विधि में भक्तिभावपूर्वक भाग लिया और सभी हरिभक्तों को भी मिले।

Kharghar Temple Patotsav at Kharghar

✻ शुक्रवार, दि. १ से मंगलवार, दि. ५ मई दौरान नासिक में ५ से १६ साल की उम्र के बच्चों के लिये आनंद के साथ आध्यात्मिक मूल्यों की प्रगति हो इसलिये विशिष्ट बालशिबिर का आयोजन किया गया, जिसमें मुंबई, महाराष्ट्र से करीब ५० से ज्यादा बच्चोंने भाग लिया।

प्रथम दिन संतभाईयों, संतबहनों और बालशिबिर के संचालको द्वारा दीप प्रागट्य के साथ इस शिबिर का आरंभ हुआ।

बच्चों को प्रथम दिन से ही सुबह ध्यान, पूजा, धुन, भजन और योग के आसन द्वारा कई आध्यात्मिक मूल्यों की जानकारी दी गई। साथ ही नीलकंठवर्णी के वनविचरण के Video का भी सभीने दर्शन किया। बच्चों को नासिक के BAPS स्वामिनारायण मंदिर, नीलकंठवर्णी के प्रसादी के स्थान,

Bal Shibir at Nasik

Snehal Sindhu may 2026-V11.indd 2 08-08-2026 20:05:53

With Shri. Shrikantji and Shri. Jagdishji

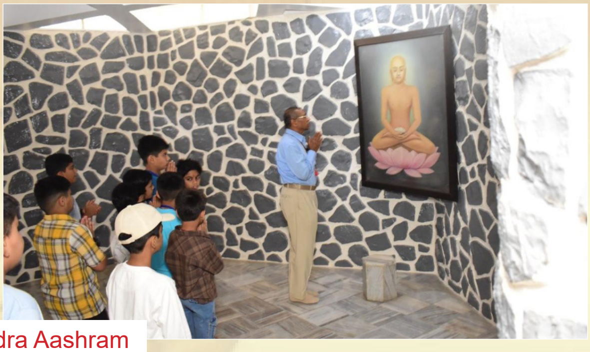

At Shrimad Rajchandra Aashram

Snehal Sindhu may 2026-V11.indd 3 08-08-2026 20:05:54

At Prasadik Swaminarayan Temple

श्रीमद राजचंद्र आश्रम, गुरुहरि काकाजी महाराज के प्रासादिक स्थानों, कलापूर्णम जैन मंदिर के दर्शन करने भी लेकर गये।

शाम को श्री. श्रीकांतभाईने बच्चों को BAPS Temple का इतिहास तथा स्वामिनाराण भगवान के बारे में अच्छी जानकारी दी। MESO कंपनी के IT Department के Head श्री. जगदीशजी ने भी बच्चों को AI के बारे में अच्छी बातें बताई।

प.पू. भरतभाई और प.पू. वशीभाईने बच्चों को शिबिर का महत्व तथा स्वामिनारायण भगवान की चेष्टा के बारे में संक्षिप्त में बताया और आशीर्वाद दिये।

पवई की संतबहनें पू. माधुरीबहन, पू. आरतीबहन तथा अन्य साथीदारो प.भ. पूनमबहन सिंघल,

At Kalapurnam Jain Temple

Snehal Sindhu may 2026-V11.indd 4 08-08-2026 20:05:54

Bal Shibir at Nasik

At BAPS Swaminarayan Temple

प.भ. प्रीतिबहन लाड, प.भ. प्रियाबहन लाड और साधकभाईयों, युवकों पू. संकेतभाई मेघानंद, पू. विशालभाई बिरादर, पू. आनंदभाई, पू. अक्षयभाई आहिर, प.भ. प्रसादभाई पाटीलने इस शिबिर में सभी शिबिरार्थीओं को नृत्य, स्वामी की बातें, भजन, श्लोक एवम् कई सत्संग से जूडी कहानीयाँ से आनंद करवाया। साथ ही संकेतभाई मेघानंद और अन्य युवकोंने शिबिर का आयोजन बहुत अच्छे तरीके से किया था।

शिबिर की पूर्णाहुति के सत्र में शाम को बच्चोंने श्रीजी महाराज तथा गुणातीत स्वरुपों के भजनों प्रस्तुत किये, नृत्य किया तथा उनके कुछ प्रसंगो को Skit Play के रुप में प्रस्तुत कर आनंद किया। उसके बाद संतभाईयोंने सभी बच्चों को इस शिबिर में भाग लेने खास Certificate देकर आशीर्वाद दिये।

पूरे शिबिर दौरान सभी आयोजकों तथा युवकोंने और अन्य कार्यकर्ताओंने भक्तिभाव से सारी व्यवस्था बहुत अच्छी तरह सँभाली।

✻ **गुरुवार, दि. ७ मई की भजन संध्या बालमंडल द्वारा 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में भक्तिभाव से हुई। संगीत के विशारद प.भ. गजाननभाई खेचे द्वारा शिक्षित**

Snehal Sindhu may 2026-V11.indd 5 08-08-2026 20:05:55

Bhajan Sandhya at "Akshardham" Temple, Powai

सभी कलाकारोंने अच्छी तरह से भजन प्रस्तुत करके सभीको मंत्रमुग्ध कर दिया। संगीत में भी गजाननभाई की पुत्री प.भ. युगंधराबहनने अच्छा साथ दिया।

प.पू. भरतभाई ने अपने आशीष में कहा कि बच्चोंने अद्भुत माहौल खडा कर दिया। आज खारघर में भी संतभगवंत साहेबजी के सानिध्य में भजन संध्या हो रही है। हम भगवान के चरणों में हमारी प्रार्थना रखते है उसके पहले ही वो हमारी इच्छा जान लेते है। प्रार्थना यज्ञ के समान होती है। **(१) जपयज्ञ (२) स्मृतियज्ञ (३) ध्यानयज्ञ (४) प्रार्थनायज्ञ (५) प्रकाशयज्ञ. गुरुहरि काकाजी महाराजने यह पाँच यज्ञ हमें सीखाये है। प्रार्थना दो प्रकार से होती है। (१) खुल्ली प्रार्थना (Open Prayer) (२) अंतरदृष्टियुक्त प्रार्थना (Close Prayer)**. जैसी प्रार्थना हम करते है वैसा ही फल प्राप्त होता है। भगवान हमारी शक्ति से ज्यादा देते है, लेकिन हम सीमित प्रार्थना ही करते है। काकाजी आपकी मर्जी के मुताबिक हो ऐसी खुल्ली प्रार्थना हमें करनी चाहिए। स्तुति में कोई मांग होती नहीं है, केवल गुणानुवाद

Bhajan Sandhya at "Akshardham" Temple, Powai

Snehal Sindhu may 2026-V11.indd 6 08-08-2026 20:05:55

Bhajan Sandhya at "Akshardham" Temple, Powai

होता है। हरपल प्रभु को आभार मानते रहना चाहिए। कृतज्ञता का भाव होना चाहिए। तुं राजी हो, केवल तुं ही, तुं ही भावना रखनी है। मैं आपका गुलाम हूँ, केवल प्रभु को राजी करने की ही भावना होनी चाहिए। हम प्रार्थना करें या न करें लेकिन भगवान हमारा अच्छा ही करेंगे। तो हम सच्चे सेवक बने और काकाजी की प्रसन्नता के पात्र बने वही प्रार्थना।

अंत में बाल शिबिर के बच्चों और सभी सहायकों को विशिष्ट बख्शिश दी गई। साथ में भजन मंडल के बच्चों का अभिवादन हुआ।

Virat Hindu Maha Sammelan at Powai

✻ रविवार, दि. १० मई को हिंदु सम्मेलन की ओर से विराट हिंदु महासम्मेलन अंतर्गत सनातन संस्कृति और मूल्यों पर आधारित कार्यक्रम रखा गया था। मुख्य अतिथि के रुप में प.पू. भरतभाई ने इस आयोजन में उपस्थित होकर कार्यक्रम को आगे बढाने मार्गदर्शन दिया। उन्होंने भारतीय संस्कृति तथा गुरुहरि काकाजी महाराज के मैत्रीभाव के विषय पर आशीर्वचन प्रदान किये। भारतीय संस्कृति को ध्यान में रखते हुए नृत्य तथा सुंदर भरतनाट्यम् भी प्रस्तुत हुआ। इस आयोजन का मुख्य हेतु हिंदु धर्म के महत्व तथा सनातन मूल्यों को ज्यादा महत्व देते हुए जागृतता और सांस्कृतिक गौरव की भावना को प्रदर्शित करना था।

Snehal Sindhu may 2026-V11.indd 7 08-08-2026 20:05:56

Virat Hindu Maha Sammelan at Powai

✻ रविवार, दि. १७ मई से दि. १५ जून तक ब्र.स्व. भगतजी महाराज, ब्र.स्व. कृष्णजी अदा और ब्र.स्व. जागास्वामी महाराज के जीवन और संदेश पर आधारित 'अक्षरपुरुषोत्तम गौरव गाथा' पारायण का आयोजन 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई हुआ।

प्रथम दिन विशिष्ट पोथी यात्रा स्वामिनारायण मार्ग से पवई मंदिर तक ढोल-नगारों के साथ सभी संतभाईयों, संतबहनों तथा हरिभक्तोंने आनंद करते हुए प्रारंभ की गई। हररोज कथा के अंत में शिकागो से प.पू. दिनकरभाई का भी लाभ सभीको मिला। इस पारायण में तीनों स्वरुपों - भगतजी महाराज, जागास्वामी और कृष्णजी अदा के जीवन के अद्भुत

'Shri Aksharpurushottam Gaurav Gatha' Parayan at "Akshardham" Temple, Powai

Snehal Sindhu may 2026-V11.indd 8 08-08-2026 20:05:56

प्रसंगो की जानकारी मिली। इन गुणातीत स्वरुपोंने अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी को कैसे राजी किया तथा अक्षरपुरुषोत्तम उपासना के लिये उन्होंने जो तकलीफें उठाई उसके बारे में संक्षिप्त में सभीको बताया। साथ ही उन्होंने शास्त्रीजी महाराज को अक्षरपुरुषोत्तम युगल उपासना के प्रवर्तन के लिये कैसे तैयार किये और शास्त्रीजी महाराजने भी शारीरिक और मानसिक कष्ट, अपमान सहन करके उपासना के प्रवर्तन के लिये जो कार्य किया उसे सुनकर सभी उनके प्रसंगों में डूब गये। समग्र पारायण दौरान मंदिर की अन्य गतिविधियाँ सामान्य रुप से चलती थी, फिर भी इन सभी वकताओंने अद्‌भुत श्रम लेकर पारायण की सभी तैयारी अच्छे से की। उसमें उनको पू. संदीपभाई, पू. मननभाई, पू. संकेतभाई, पू. विशालभाई, प.भ. प्रसादभाई पाटिल और अन्य साथीओंने अच्छा साथ दिया।

पारायण की पूर्णाहुति के दिन बाल मंडल के बच्चोंने इस पारायण के अनुरुप नृत्य प्रस्तुत किया, जिसमें अंत में तीनों स्वरुपों का पात्र बच्चोंने प्रत्यक्ष प्रगट करके सभीको भक्तिभाव में डूबों दिया। अंत में दिल्ली से प.पू. गुरुजी के विशिष्ट आशीष भी मिले। कईं हरिभक्तों दूर-दूर से आकर पारायण का लाभ लेने आते थे। सभीने पारायण में विशिष्ट प्रसाद तथा पूजन का भी योगदान दिया। पू. मीनाबहन, प.भ. मितेशभाई

'Shri Aksharpurushottam Gaurav Gatha' Parayan at "Akshardham" Temple, Powai

Snehal Sindhu may 2026-V11.indd 9 08-08-2026 20:05:57

'Shri Aksharpurushottam Gaurav Gatha' Parayan at "Akshardham" Temple, Powai

Snehal Sindhu may 2026-V11.indd 10 08-08-2026 20:05:57

Veer Savarkarji Kabaddi Tournament at Powai

और साथीओंने सभी की प्रसाद की अच्छी व्यवस्था की। पू. लीलुबहनने भी हररोज पारायण की विशिष्ट आकर्षक आरती तैयार करके सभीको अच्छा दर्शन का लाभ दिया।

❊ रविवार, दि. ३१ मई को प.पू. भरतभाई और प.पू. वशीभाई ने वीर सावरकरजी कबड्डी Tournament में आशीष देने पधारे थे। दीप प्रागट्य के साथ इस समारोह का प्रारंभ हुआ। वशीभाईने उपस्थित महानुभावों, खिलाडियों को सफल होने के लिये खेल के मूल्यों के बारे में प्रोत्साहन देकर अच्छा मार्गदर्शन दिया और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से सभीके जीवन में खेलदिली, सुहृदभाव, शारीरिक सज्जता, शिस्त और एकजूट होकर उत्साह से हिस्सा लेने अच्छा मार्गदर्शन दिया।

❊ ❊ ❊

॥ સ્વામિશ્રીજી ॥

‘ચૈતન્યના વેપાર વિનાનું ન હોય ચરિત્ર તમારું...’

બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજ અને બ્ર.સ્વ. હરિપ્રસાદસ્વામીજીનો તા. ૨૩ મેના રોજ મંગલ પ્રાગટ્યદિન છે. ધરતીના ઈતિહાસમાં આવો સુખદ યોગાનુયોગ જવલ્લેજ આવતો હશે. બન્ને ગુણાતીત પુરૂષોએ – એકે અદ્‌ભુત ગુરૂ તરીકે અને બીજાએ એમના અનુપમ સેવક તરીકે આપણને જે દર્શન કરાવ્યું છે તે અજોડ અને અદ્વિતીય છે. સ્વામીજીએ યોગીબાપાને જોયા, જાણ્યા, અનુભવ્યા અને માણ્યા અને અખંડ ધાર્યા. એ આખી એમની જીવનયાત્રામાં હજારો પ્રસંગોના પોતે સાક્ષી રહ્યા છે. એ પ્રસંગોને ખૂબ જ ઝીણવટભરી નજરે, એક સાધકની દૃષ્ટિએ, અત્યંત દિવ્યભાવથી, એક વિચક્ષણ સેવક તરીકે તેમણે યોગીબાપાના પળેપળના જીવનનું, એક–એક ચરિત્રનું જે દર્શન કર્યું છે તેને યથાર્થ વર્ણવવા આપણા શબ્દો તો ઓછા જ પડે. તો આવો, હરિપ્રસાદસ્વામીજીના શબ્દોમાં યોગીજી મહારાજનો એક વિરલ પ્રસંગ અત્રે આપણે માણીએ.

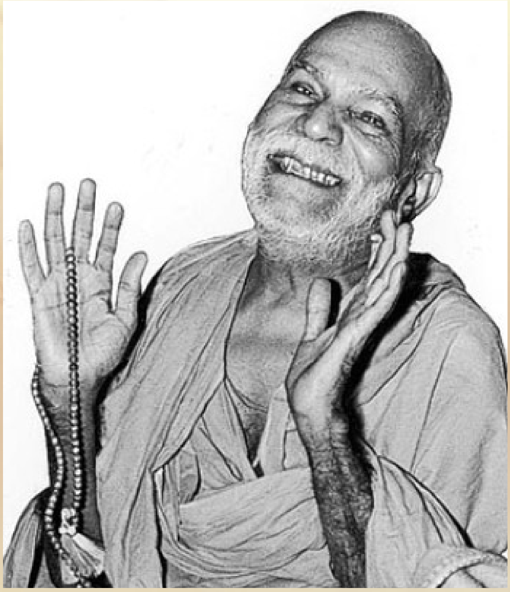

સ્વામીજી પૂર્વાશ્રમમાં પ્રભુદાસભાઈ તરીકે યોગીબાપાની સેવામાં હતા. એક વખત તેઓએ બાપા સાથે વિચરણમાં ગુજરાતમાં અમદાવાદની પાસે આવેલ અડાલજની વાવનાં દર્શન કર્યાં.

સ્વામીજી કહે છે કે ‘સ્વામીની વાત કરું છું, મા જેવા સાધુની... પછી અમે ગાડાંમાં બેઠા, તે દિવસે ગાડાં હતાંને... સ્વામી એક ગાડાંમાં... ખેતરમાંથી પસાર થતાં હતા. ત્યાં ગાયો દોહવાતી હતી બાજુમાં, સ્વામી કહે, ‘લઘુ કરવા જવું છે, ઊભું રાખો.’ એની આત્યંતિક કલ્યાણની કોઈ યોજનાની આપણને ખબર ન પડે. આપણે કંઈ જોવાનું ન હોય. અમે તો આવું બહુ જોયુંને... કશું જ કોઈનું જોયું નથી. સંકલ્પ જ ન ઊઠે ને...

Snehal Sindhu may 2026-V11.indd 11 08-08-2026 20:05:57

ગાડું ઊભું રાખ્યું. સ્વામી લઘુ કરવા ઊતર્યા... સંધ્યાકાળનો સમય હતો. અમારે જે ગામે જવાનું હતું તેને હજી ત્રણ કિ.મી. બાકી હતું.

સ્વામી કહે, આપણે એવું કરોને... આ ઠાકોરજીને દૂધ પાવું છે. તો દૂધ શોધી લાવોને... મેં કહ્યું. સ્વામીજી! અહીંયાં ગાયો દોવાય છે. અમે તો આમ Military. સ્વામી કહે એટલે પતી ગયું. અમે તો પહોંચી ગયા.

પેલી બહેનોને કહ્યું, સ્વામીજી આવ્યા છે અને અમને દૂધ આપો. ઠાકોરજીને પીવડાવીને તમારું દૂધ પાછું આપીએ. બહેનો કહે, 'તમે બધા જ સંતો પીઓ. યુવકો પીઓ. બધા જ...' તે દસ લીટર દૂધ મૂકી દીધું. સ્વામી કહે, 'બધા જ પીઓ.' સ્વામી બહુ દૂધ ના પીવે. સ્વામી કહે, 'લાવો, હું પણ પીઉં.' વાટકી પી ગયા. આમ અડે જ નહીં દૂધને... પણ આજે આખી વાટકી પી ગયા. માધવ કહે, 'સ્વામીએ તો ભારે કરી નાંખીને! આખી વાટકી દૂધ પી ગયા.' આમ કટાઈમમાં ના પીવે, કદાચ ઉકાળો પીવે તો રાત્રે એના સમય પ્રમાણે જ. કોઈ પધરામણીમાં યોગીજી મહારાજ કશું જ ના લે.

પછી ગાડાંમાં બેઠા. સ્વામી બોલ્યા, 'કૃષ્ણ પરમાત્માના વખતમાં આ ભરવાડ દીકરીઓએ કૃષ્ણની ખૂબ સેવા કરેલી. હવે આત્યંતિક કલ્યાણના માર્ગે ચાલશે.'

આપણો આ વિષય છે? શાથી દૂધ પીધું? ને શા માટે લીધું? શા માટે? એને તમારો છેલ્લો જન્મ કરવા કેટલીવાર લાગવાની?

એટલે માધવે તરત પ્રશ્ન પૂછ્યો, 'પાંચ હજાર વર્ષ થયા. ત્યાંસુધી એ ચૈતન્યો ધરતી પર ફર્યા જ કરતા હતો.' ત્યારે સ્વામીજીએ બહુ સ્પષ્ટપણે કહ્યું કે 'કૃષ્ણ પરમાત્માની કોક ભક્તિના ફળસ્વરૂપે અને નિર્દોષભાવના ફળસ્વરૂપે કોઈ ૮૪ યોનિમાં એ ચૈતન્યો ગયા નથી. આ યોનિમાં હતા. હવે છેલ્લો જન્મ થશે.' માધવે પૂછ્યું, 'તો ગોલોકના વાસી કેમ બન્યા નહીં?' સ્વામીએ કહી દીધું કે 'ગોપીઓએ કૃષ્ણની સેવા કરી હતી. ગોપીઓ કૃષ્ણમાં ઓતપ્રોત થઈ ગઈ હતી. પણ કૃષ્ણનો એવો સંકલ્પ નહોતો કે મારી પાસે ગોલોકમાં રહે. આ વાત પછી હું તમને સમજાવીશ.' સ્વામી બહુ મીઠાશથી બોલે ને બહુ દયાળુ હતા. કૃષ્ણનો એવો સંકલ્પ જ હતો કે ધરતી પર રહીને ભગવાન અને સંતોની સેવા કર્યા કરો.

એનું કોક પુણ્ય જાગ્રત થવાને કારણે અને કરવા માટે એ ગાડું ઊભું રખાવ્યું. એ લઘુ કરવા ઊતર્યા. દૂધ પાયું ને પીધું. સેવા લીધી. આપણો આ વિષય નથી. મોટાપુરૂષ અને ગુણાતીત પુરૂષો આ ધરતી પર વિચરણ કરતા હોય એની પાછળ બીજો કોઈ હેતુ નહીં, પણ એટલો જ હેતુ હોય કે ચૈતન્યો સુખી થાય. એની એ આખી જ પ્રક્રિયામાં તમે લોકો આવનાર કોણ? તમારે એવું કયું લાયસન્સ પ્રભુએ આપી દીધું છે કે બીજાની ક્રિયા જોવામાં એકદમ આનંદમાં આવી જાવ છો? તમારી નાલાયક અને નીચ સાત્વિક બુદ્ધિ છે. '

આવા તો યોગીબાપાના અનેક પ્રસંગોના સ્વામીજી સાક્ષી રહ્યા છે. એટલું જ નહીં પરંતુ તે પ્રસંગોમાં અદ્‌ભુત નિર્દોષબુદ્ધિ અને દિવ્યભાવ રાખીને એવું તો સેવન કર્યું કે તેમના તદ્ગતભાવને પામી ગયા. જો કે સ્વામી પામી ગયા એ તો શબ્દપ્રયોગ લૌકિક રીતે કરીએ છીએ, કારણ તેઓ તો એમના વારસદાર તરીકે જ ધરતી પર આવ્યા હતા, પરંતુ એક સાધકની દૃષ્ટિએ આધ્યાત્મિક ઉત્ક્રાંતિનો માર્ગ આપણને સહુને દર્શાવવા માટે જ તેમણે આ રીતિ પસંદ કરી હતી.

ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજે પણ આવા કેટલાય પ્રસંગોમાં આવાં ચરિત્રો દ્વારા પોતાનું ભક્તવત્સલપણાનું દર્શન કરાવ્યું છે તથા અગમ્ય ગુણાતીત રીતિની પ્રતીતિ સહુને કરાવી છે. બહારથી સામાન્ય કે લૌકિક લાગતાં

Snehal Sindhu may 2026-V11.indd 12 08-08-2026 20:05:58

ચરિત્રોમાં જે અદ્‌ભુત આધ્યાત્મિક રહસ્ય કે ગૂઢાર્થ છૂપાયો હોય એ તો એ પ્રસંગ પૂરો થયા પછી એના સાક્ષી કે કાકાજીના સખા કે એમના તદ્ગતભાવને પામેલા મુક્તો દ્વારા જ આપણને ખ્યાલ આવે.

આપણા નિષ્ઠાવાન હરિભક્ત મુક્તરાજ પ.ભ. જાદવજીભાઇએ કાકાજીનો એક ખૂબ જ મનનીય પ્રસંગ વર્ણવ્યો છે.

જાદવજીભાઈનાં બહેન જ્યારે સર્ગભા હતાં ત્યારે માટુંગામાં ડૉ. સી.એલ. ઝવેરીની હૉસ્પિટલમાં તેમને દાખલ કર્યાં હતાં. કાકાજી કોઈ પધરામણી માટે બોરિવલી તરફ જઈ રહ્યા હતા ત્યારે એમની સાથે પ.પૂ. કાંતિકાકા પણ હતા. કાકાજી રસ્તામાં જ આવતી હૉસ્પિટલમાં જાદવજીભાઈની બહેનને જોવા પધાર્યા ત્યારે જાદવજીભાઈનાં માતાજી પૂરીબાઈ ત્યાં હાજર હતાં. તે વખતે બહેનની તબિયત જરા નાજુક હોવાથી બધાં ચિંતામાં હતાં. એ દિવસે રવિવાર હતો. ત્યારે કાકાજીએ આશીર્વાદ આપતાં કહ્યું હતું કે 'જાઓ, એમને કાંઈ નહીં થાય અને ગુરુવાર સુધીમાં તો બધું સારું થઈ જશે.' એ પછી કાકાજી વિહારલેકમાં અંગત મુક્તોની શિબિરમાં ગયા હતા. ત્યારે જાદવજીભાઈ પણ એ શિબિરમાં ગયા હતા. બરાબર ગુરુવારે રાત્રે જાદવજીભાઈનાં બહેને સ્વસ્થ રીતે બાળકને જન્મ આપ્યો. તે જ વખતે કાકાજીને થોડી ઊલટીઓ થઈ અને બેચેની અનુભવી. બીજે દિવસે સવારે જ્યારે જાદવજીભાઈને એમની બહેનના સારા સ્વાસ્થ્યના સમાચાર મળ્યા ત્યારે એમને ખ્યાલ આવ્યો કે કાકાજીએ એમની બીમારી પોતાને માથે લઈ લીધી હતી અને એમની બહેનને ખૂબ જ નાજુક પરિસ્થિતિમાંથી બચાવી લીધાં હતાં. આમ મોટાપુરુષની કરૂણાનો એમને પ્રત્યક્ષ અનુભવ થયો હતો!

આવી જ રીતે એક વખત સાંતાક્રુઝમાં આપણા એવા જ નિષ્ઠાવાન અને આત્મીય સ્વજનસમા પ.ભ. મહેન્દ્રભાઈ ગાંધીને એક એવી બીમારી લાગુ પડી હતી કે ઘણી બધી દવાઓ કરવા છતાં તેમને કાંઈ જ ફરક પડતો નહતો. આ વાતની કાકાજીને ખબર પડી. એટલે તેમની તબિયત જોવાના મિષે તેઓ તેમના ઘરે ગયા અને ત્યાં જ ભોજનનો કાર્યક્રમ રાખ્યો. તેમના પત્ની પ.ભ. વસુબહેને ખૂબ જ ભાવથી રસોઈ બનાવી હતી. કાકાજીએ એ બધી જ વાનગીઓ પ્રેમથી ગ્રહણ કરી. સામાન્ય રીતે લેતા ન હોય એથી પણ વધુ માત્રામાં તેમણે ભોજન ગ્રહણ કર્યું. પછી ત્યાંથી જ્યારે વિદાય લેતા હતા ત્યારે બહાર આવી અચાનક બધું જ વમન કરી નાંખ્યું. બધા ગભરાઈ ગયા કે કાકાજીને શું થઈ ગયું? પરંતુ થોડીક જ વારમાં તેમણે સ્વસ્થતા બતાવી અને જાણે પોતાની કંઈ જ થયું નથી એવું દર્શન કરાવ્યું. બીજે દિવસે મહેન્દ્રભાઈને તબિયતમાં અણધાર્યો સુધારો થયો અને બે-ત્રણ દિવસમાં તો કોઈપણ દવા લીધા વગર સ્વસ્થ થઈ ગયા. ત્યારે બધાંને ખ્યાલ આવ્યો કે તબિયત જોવાના નિમિત્તે કાકાજીએ એમના ઘરે આવી એમના ભોજન સાથે એમની બીમારી પણ ગ્રહણ કરી હતી અને તરત જ વમન કરી એ બીમારીમાંથી એમના મુક્ત કરી દીધા હતા!

એકવાર કાંદિવલીના આત્મીય સ્વજન પ.ભ.ડૉ. કનકલતાબહેન તથા એમનાં બહેન તથા પ.ભ. અનસુયાબહેન રાયઠઠ્ઠા તારદેવ મંદિરે કાકાજીનાં દર્શને આવ્યાં હતાં. તેમનાં કોઈક સંબંધી માંદા હતા અને એ બહેનોએ એમનાં સ્વાસ્થ્ય માટે કાકાજીને પ્રાર્થના કરી અને જો તેઓ આવી શકે તો તેમને જોવા માટે ઓપેરા હાઉસ નર્સિંગ હૉમમાં રાખ્યા હતા ત્યાં પધારવા પણ કહ્યું. કાકાજી તો ભક્તવત્સલ, એટલે તરત જ તૈયાર થઈ ગયા અને જ્યારે નીચે ઊતર્યા ત્યારે પ.પૂ. વશીભાઈને તેમના મિત્રો સાથે તેમણે ત્યાં કંપાઉન્ડમાં જોયા. તે વખતે વશીભાઈએ ઘરનાં જ કપડાં પહેર્યાં હતાં એટલે કે પાયજામો અને શર્ટ પહેર્યાં હતાં અને પગમાં ચંપલ પણ નહતાં. પરંતુ કાકાજીએ તો એમને કહ્યું કે 'ચાલ, આપણે આ બહેનો જોડે બહાર જવું છે.' એટલે વશીભાઈ તો તરત જ એ જ સ્થિતિમાં કાકાજી સાથે ગાડીમાં બેસી ગયા ને તેઓ ચારેય જણા ઓપેરા હાઉસ પહોંચ્યાં. પછી વશીભાઈ અને બહેનોને લઈને કાકાજી નર્સિંગ હૉમમાં ગયા અને એ બહેનોનાં સંબંધીના સ્વાસ્થ્ય માટે પ્રાર્થના પણ કરી. તે દરમ્યાન તેઓ જ્યારે નર્સિંગ હૉમમાં જતાં હતાં ત્યારે સામેથી જ એક અન્ય સંસ્થાના અને કાકાજી પ્રત્યે થોડો અણગમો અને વિરોધ દર્શાવતા સંતો સામે મળ્યા. કાકાજીએ એમને જય સ્વામિનારાયણ પણ કહ્યા અને પછી તો એ સંતો પોતાના માર્ગે ચાલી ગયા. એ વખતે જ વશીભાઈને ખ્યાલ આવ્યો કે કાકાજીએ અચાનક જ

Snehal Sindhu may 2026-V11.indd 13 08-08-2026 20:05:58

શા માટે એમને સાથે લીધા હતા? કારણ કે જો તે સંતો કાકાજીને બહેનો સાથે એકલા જોઈ લે તો એમને કાકાજી માટે જે પૂર્વગ્રહ તો તેમાં ઘણો વધારો થાય. પરંતુ કાકાજીએ અંતર્યામીપણે એ વાત જાણી એવી તક ઊભી થવા નહીં દીધી!

ઈ.સ. ૧૯૭૪માં કાકાજી, કાંતિકાકા સાથે પ.ભ. હેમંતભાઈ મર્ચન્ટ માણાવદરની ધર્મયાત્રામાં કાકાજીના સેવક તરીકે પહેલી વખત ગયા હતા. આમ તેમને કાકાજીની સેવાનો બહુ મહાવરો નહતો છતાં અરૂણભાઈએ તેમને થોડું બતાવ્યું હતું તે પ્રમાણે તેઓ કાકાજીની રુચિ અને સગવડ સાચવવા પ્રયત્ન કરતા હતા. આ ધર્મયાત્રા દરમ્યાન તેઓએ એક વખત વેરાવળ પ.ભ. ભટ્ટસાહેબ (પૂ. સુબોધજીવનસ્વામી (હરિધામ)ના પિતાશ્રી)ના ઘરે પધરામણીનો કાર્યક્રમ રાખ્યો હતો. દરરોજની જેમ જ બપોરે જમ્યા પછી કાકાજી જે પાન લેતા હતા તે હેમંતભાઈએ તૈયાર કરીને કાકાજીને આપ્યું, પરંતુ કાકાજીએ ના પાડી અને કહ્યું કે 'મારે અત્યારે જરૂર નથી.' હેમતંભાઈ વિચારમાં પડી ગયા કે પાન બનાવવામાં કંઈ ભૂલ થઈ છે કે સમય સચવાયો નથી? પરંતુ એમને કશો જ ખ્યાલ આવ્યો નહીં અને કાકાજીની જેવી મરજી એમ મનને મનાવી લીધું. કાકાજી પલંગ ઉપર થોડીવાર આરામ કરવા બેઠા અને ૧૦ જ મિનિટમાં અન્ય કોઈ સંસ્થાના હરિભક્તો અચાનક જ કાકાજીને મળવા ત્યાં આવ્યા. થોડી ઔપચારિક અને ધર્મ-નિયમની ચૂસ્તતાની વાતો કરી વિદાય લીધી. તેમના ગયા પછી કાકાજીએ હેમંતભાઈ પાસે પાન માંગ્યું. ત્યારે હેમંતભાઈને ખ્યાલ આવ્યો કે કાકાજીએ પહેલાં પાન કેમ ગ્રહણ ન કર્યું!

કાકાજીએ જ્યારે સ્વામી રામતીર્થ જન્મશતાબ્દી મહોત્સવ નિમિત્તે એના માનદ્ ખજાનચી તરીકે જવાબદારી સંભાળી ત્યારે ઘણા બધા જૂના અને કહેવાતા મોટેરા હરિભક્તો પણ વિચારમાં પડી ગયા હતા કે આવું કાકાજીએ શું કામ કર્યું હશે? પરંતુ એની પાછળ કાકાજીની જે ગણતરી હતી કે જેમણે કાકાજીને આ જવાબદારી સ્વીકારવા ખાસ સૂચન કર્યું હતું તે ભારત સાધુ સમાજ-દિલ્હીના પૂ. આનંદસ્વામીજી પ.પૂ. ગુરૂજીને ખૂબ સાનુકૂળતા કરી શકે તો દિલ્હીમાં તેમને કંઈ જ તકલીફ પડે નહીં. પરંતુ એ બધી ગણતરીનો સામાન્ય હરિભક્તોને તો ક્યાંથી ખ્યાલ હોય! આથી કેટલાકે તો એ બાબતમાં અણછાજતી ચર્ચાઓ પણ કરી હતી. તેવી જ રીતે ગુલઝારીલાલ નંદાજીએ એમની કુરૂક્ષેત્રમાં આવેલી શ્રીકૃષ્ણ આદર્શ આયુર્વેદિક ફાર્મસીની જવાબદારી સ્વીકારવા કાકાજીને આગ્રહપૂર્વક પ્રાર્થના કરી ત્યારે પણ કાકાજીએ તે સ્વીકારી તેથી ઘણાને કાકાજીએ આવું શા માટે કર્યું તેવો પ્રશ્ન થયો હતો. પરંતુ તેની પાછળ ગુરૂહરિ કાકાજીને શાસ્ત્રીજી મહારાજે કહેલ વચન કે તમે નંદાજીનું સગા ભાઈ જેવું ધ્યાન રાખજો. તે વચનને આગળ રાખીને જ કાકાજીએ આવી નુકસાનમાં જતી ફાર્મસીને પગભર કરવા ઘણો બધો દાખડો કર્યો હતો તેનો તો કેવી રીતે ખ્યાલ આવે? એ ફાર્મસીના સંચાલન માટે કાકાજીએ ઘણા બધા સંત્સંગીઓને જોડ્યા હતા અને સહુને ખૂબ જ સારા અનુભવો પણ થયા હતા અને એ તેમના જીવનનું અમૂલ્ય સ્મૃતિનું ભાથું બની ગયું હતું.

આવા તો ગુણાતીત પુરૂષોના કેટલાય પ્રસંગો છે કે જે વર્ણવવા જઈએ તો પાનાનાં પાનાં ભરાઈ જાય. ગુણાતીત જ્યોતનાં અધિષ્ઠાત્રી પ.પૂ. હંસાદીદીએ અનેક અદ્ભુત ભજનો બનાવ્યાં છે. જેમાં સમગ્ર સાધના પથની પ્રક્રિયાનું સુંદર વર્ણન એમાં કર્યું છે. એમાંનું જ એક પ્રેરણાદાયી ભજન 'ઓ પ્રત્યક્ષ આતમ મારા...'ની એક સુંદર પંક્તિ 'ચૈતન્યના વેપાર વિનાનું ન હોય ચરિત્ર તમારું...'નું યથાર્થ હાર્દ સમજવા માટે તો હંસાદીદી જેવી જ અત્યંત તીવ્ર અભીપ્સા, સુરુચિ, પ્રાર્થના, પ્રપત્તિ વગેરે જેનામાં હોય એ જ એની આધ્યાત્મિક ઊંચાઈ

Snehal Sindhu may 2026-V11.indd 14 08-08-2026 20:05:58

અને ઊંડાણને પામી શકે. એ હાર્દને ઉજાગર કરતાં કેટલાક પ્રસંગો આપણે અત્રે જોયા. સાચી વાત એ છે કે તેમનાં કોઈપણ ચરિત્રમાં મનુષ્યભાવ લાવ્યા વગર કેવળ દિવ્યભાવ અને નિર્દોષબુદ્ધિ રાખીને આપણે તેમણે ઉપાડેલા કાર્યમાં જો ભળી જઈએ તો 'રાખને મૂલે સોનું...' સમાન આપણને પ્રાપ્તિ થાય અને આપણું જીવન ધન્ય બની જાય. તો એવી સૂઝ અને શક્તિ આપણને પ્રદાન થાય તેવી બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજ, બ્ર.સ્વ. હરિપ્રસાદસ્વામીજીને તેમના પ્રાગટ્યદિને તથા સર્વે સ્વરૂપોનાં ચરણોમાં પ્રાર્થના.

अक्षरधामगमन

❊ प.पू. वशीभाई जिन्हें प्यार से 'पुलिस मौसी' कहते थे ऐसे सेवाभावी एवं सरल स्वभाव की प.भ. स्मिताबहन पालांडे (उम्र-७५), मालाड-मुंबई अल्प बीमारी के कारण शनिवार, दि. २ मई, २०२६ को अक्षरनिवासी हुई।

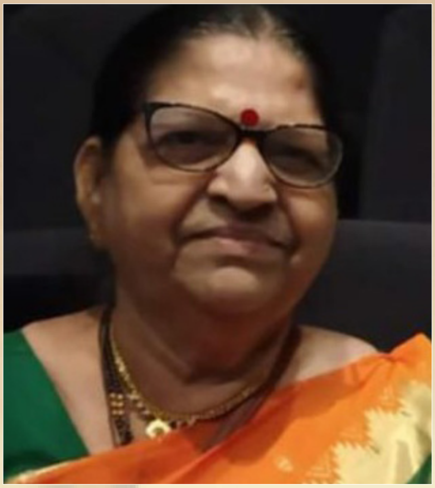

पवई मंदिर की संतबहन पू. सिद्धिबहन की पूर्वाश्रम की मौसी होने के नाते एवं मौसी मंडल, मालाड की सदस्य होने से वे सत्संग में पूरी तरह घुल-मिल गई और अंत तक सत्संग की सेवा करती रही।

परिस्थिति के साथ सामंजस्य बिठाना और सादगी से रहना, ये उनके दो महत्वपूर्ण गुण थे। नवंबर १९७७ से दिसंबर १९७७ में जब उनके पति प.भ. अनंतभाई पालांडे मंत्रालय में नौकरी करते थे उस समय ५४ दिनों की सरकारी कर्मचारियों की हडताल हुई थी, तब स्मिताबहनने अपने पति की आर्थिक योजना बिगडने नहीं दी। यहाँ उनकी पारिवारिक समस्याओं को कुशलता से संभालने की क्षमता दिखाई देती है।

पुलिस विभाग में कार्यरत रहते हुए भी उन्होंने यह नियम बना रखा था कि काम कितना भी हो, उसे तुरंत पूरा करना चाहिए। इसके लिए चाहे कितना भी समय क्यों न लगे। उनकी इस कार्यक्षमता को देखते हुए कार्यालयने उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए कई बार प्रशस्ति पत्र देकर उन्हें सन्मानित भी किया था।

पुलिस विभाग में नौकरी करते हुए भी उन्होंने कभी घमंड नहीं दिखाया। पद का कोई अभिमान न रखते हुए वे सभी से प्रेम और सम्मान से पेश आती थी।

उन्होंने अपने परिवारजनों को उनके बेटे प.भ. मिलिंदभाई, दो बेटियाँ प.भ. पल्लवीबहन और प.भ. रश्मिबहन को सत्संग की विरासत दी है और उन्होंने भी उसे सहेज कर रखा है। सादा जीवन, मिलनसार स्वभाव, सत्पुरुषों के प्रति स्नेह और सत्संग के प्रति ममत्व के कारण वे सबके दिलों में हमेशा रहेंगी। उनकी अंतिम विधि में पवई से प.पू. भरतभाई, पू. अश्विनभाई तथा पू. सिद्धिबहन, पू. कुसुमताई और पू. मननभाई गये थे और उनको श्रद्धांजलि अर्पण की थी। दि. ३० मई को 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में सभी संतभाईयों, संतबहनों और उनके परिवारजनों की उपस्थिति में खास त्रयोदशी की महापूजा हुई। सभी संतभाईयों तथा संतबहनोंने उनके लिये विशिष्ट प्रार्थना की।

भगवान स्वामिनारायण, गुरुहरि काकाजी और सभी गुणातीत स्वरुपों स्मिताबहन को अपने चरणों में स्थान दें और उनके परिवार के सदस्यों को यह दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें वही प्रार्थना।

Snehal Sindhu may 2026-V11.indd 15 08-08-2026 20:05:58

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) Divine Touch Meditation Seminar in Yoga at "Akshardham" Temple, Powai from 1st to 3rd May. (2) Visit by Saint Brothers and Sisters at 18th Patotsav of Kharghar Temple (Anoopam Mission) on 2st May. (3) Children's Camp at Nasik from 1st to 5th May. (4) Bhajan Sandhya on 7th May at "Akshardham" Temple, Powai. (5) Virat Hindu Mahasammelan at Powai on 10th May. (6) "Aksharpurushottam Gaurav Gatha" Parayan on the Auspicious day of Adhik Mas beginning at "Akshardham" Temple, Powai from 17th May to 14th June. (7) Visit by P.P. Bharatbhai and P.P. Vashibhai in Veer Savarkarji Kabaddi Tournament on 31st May. (10) Akshardhamgaman of P.B. Smitaben Palande on 2nd May. (11) Article on the auspicious day of B.S. Yogiji Maharaj and B.S. Hariprasadswamiji's Pragatyadin on 23rd May.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From
YOGI DIVINE SOCIETY
6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527
'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta

Snehal Sindhu may 2026-V11.indd 16 08-08-2026 20:05:58